New Era High School, Panchgani **Assignment 1** **Class VII**	
विषय:	हिंदी
Submission date	**2nd May**
Email id	email : kalpana.chaurasia@nehs.in
विषय वस्तु:	कविता - हम पंछी उन्मुक्त गगन के
पाठ 1 कविता-	हम पंछी उन्मुक्त गगन के
Web link	https://docs.aglasem.com/view/988cf58e-23c4-11ea-aac3-02f21f5619c4
मूल्य शिक्षण	1. इस रचना के माध्यम से विद्यार्थियों के मन में पशु पक्षियों के प्रति संवे जागृत हो | 2. **'स्वतंत्रता'** प्रत्येक जीव मात्र की आवश्यकता है, इस बात पर बल देना | 3. पशु-पक्षियों से किये जाने वाले दुर्व्यवहार को रोकना |
संकेत शब्द याद रखने के लिए|	**उन्मुक्त- आज़ाद , पिंजरबद्ध- पिंजरे में बंद , कनक- सोना (धातु) , पुलकित- खिले हुए , कटुक- कड़वी, निबौरी- नीम के वृक्ष का फल , स्वर्ण-शृंखला- सोने की कड़ी (chain), तरु-पेड़ , फुनगी- पेड़ सबसे ऊँची टहनी का भाग , नभ- आकाश , तारक- तारे , सीमाहीन- जिसका कोई अंत न , क्षितिज- प्रकृति का वह छोर जहाँ धरती और आसमान मिलते हुए से प्रतीत होते हैं , नीड़- घोंसला , छिन्न-भिन्न- तोड़-फोड़ , विघ्न- बाधा, रुकावट |**
पूर्वज्ञान	विद्यार्थियों सोचिए अगर हमें बिना अपराध जेल में रखा जाए या उम्रकैद दे दी जाए तो हमारी क्या स्थिति होगी? आज lockdown की स्तिथि में हमें क्या महसूस हो रहा है ? क्या हम बाहर जाने को आतुर हैं ? आज़ादी का महत्त्व हम अब समझ रहे हैं | सभी प्राणियों को

	आज़ादी का हक होता है इसलिए केवल अपने मनोरंजन हेतु पक्षियों कैद करना अनुचित है | आपने छठवीं कक्षा में पंछियों पर आधारित कविता तो पढ़ी ही है 'वह चिड़िया जो' जिसमें वे खतरों से खेलते हुए बहती नदी का पानी पीना चाहते हैं| अतः यह कविता भी पंछियों की उसी प्रकृति का वर्णन करती है|
सहायक सामग्री	1. पाठ्य पुस्तक, हिंदी की कॉपी|

क्रियान्वयन				
दिनांक	मुख्य काव्यांश	सहायक सामग्री	संक्षिप्त पुनरावृत्ति और मूल्यांकन	अभ्यास हेतु दिशानिर्देश
27 / 4 / 20	***<u>प्रस्तावना:</u>*** कठिन शब्दों के अर्थ पढ़कर कविता की इन पंक्तियों को पढ़कर अर्थ समझें| ***हम पंछी*****.....** **.झूले |** ***<u>मुख्य पाठ</u>*** **-** प्रस्तुत कविता शिवमंगल सुमन जी द्वारा रचित 'हम पंछी उन्मुक्त	पाठ्यपुस्तक- वसंत भाग २	जैसे- १. पंछी कहाँ उड़ना पसंद करते हैं?	दिए गए शब्दों के अर्थ कॉपी में लिखकर

	गगन के' मुख्यतः स्वतंत्रता के महत्त्व को दर्शाती है	जिस प्रकार हम मनुष्य स्वतंत्रता पाने को लालायित रहतें हैं, उसी प्रकार पक्षी भी खुले आसमान में विचरण करना पसंद करते हैं	वे पिंजरे में बंद होकर रहना नहीं चाहते	उस सोने के पिंजरे में यदि वे उड़ने का प्रयत्न भी करें तो पिंजरे की तीलियों से उनके पंख टूट जाएँगे	पक्षी कहना चाहते हैं कि, "सोने का पिंजरा हमें कोई सुख नहीं दे सकता	हमारे लिए स्वतंत्रता ही महत्त्वपूर्ण है चाहे उससे हमें कितनी ही तकलीफ क्यों न मिले |" पिंजरे में चाहे उनके लिए सोने की कटोरी में मैदा ही क्यों न परोसा जाये , वे स्वच्छन्द रहकर कड़वी निबौरी खाना पसंद करते हैं	उन्हें बंधन स्वीकार नहीं | पक्षी बंधनों में बंध कर अपनी उड़ान भी भूल चुके हैं	इसलिए वे कहते हैं कि सोने की जंजीरों में बंध कर हम अपनी चाल और खुले आकाश में उड़ने की अपनी योग्यता की सारी बातें भूल चुके हैं	अब तो केवल स्वप्न में ही वे उड़ने की, और पेड़ की सबसे ऊँची डाली पर झूला झूलने की कल्पना करते हैं	अर्थात बंदी जीवन में वे अपनी स्वाभाविक क्रियाएं भी भूल चुके हैं	स्वतंत्र जीवन की बातें अब स्वप्न मात्र होकर रह चुकी हैं		२. पिंजरे में उड़ने का प्रयास करने पर पक्षियों को क्या तकलीफ होती है? ३. पिंजरे की तीलियाँ किस धातु से बनी हैं? ४. पंछी सोने की कटोरी के मैदे की अपेक्षा क्या खाना अधिक	पूछे गए प्रश्नों के उत्तर कॉपी में लिखिए| कविता दिए गए link के आधार पर इन्टरनेट से downloa d कीजिये	अर्थ समझने के लिए कविता को समक्ष रखकर पंक्तियों के अनुरूप

			पसंद करते है? ५. बंधन के कारण उनका क्या नुकसान हुआ है? ६. पंछी अपने सपनों में किस बात की कल्पना करते हैं?	अर्थ का मिलान कीजिये व समझिये|
	ऐसे थे.....विघ्न न डालो | ***<u>मुख्य पाठ</u>*** - पढ़ाए गए काव्यांश को पुनः दोहराते हुए पद्यांश आगे पढ़िए - कि पक्षी कहते हैं कि हमारी बड़ी इच्छा थी कि हम	पाठ्य पुस्तक	प्रश्न: १. पक्षियों की क्या इच्छा है?	**पूछे गए प्रश्नों के उत्तर कॉपी में लिखिए**

	नीले आकाश की सीमाओं तक जाकर उन्हें छुएँ	हम चाहते थे कि सूर्य की लाल किरण के सामान अपनी चोंच खोलकर तारों रुपी अनार के लाल-लाल दानों को चुगें	हमारी यह इच्छा तभी पूरी हो सकती है जब हमें उड़ने की आज़ादी मिले | पक्षी चाहते हैं कि उनका मुकाबला आकाश की सीमा क्षितिज से होता; इस प्रकार या तो वे क्षितिज को पा लेते या थक कर प्राण त्याग देते	अर्थात वे गुलामी से अधिक मृत्यु को अपनाना स्वीकार करते हैं | पक्षी अंत में मनुष्यों को सन्देश देते हुए कहते हैं कि' "हे मनुष्यों ! हमें भले ही घोंसला न दो, बेशक पेड़ की डाली का सहारा तोड़ डालो ; परन्तु जब विधाता ने हमें उड़ने के लिए पंख दिए हैं, तो हमें पिंजरे के कैदी बना कर हमारी स्वतंत्र उड़ान में बाधा मत डालो	हमें पिंजरे में रहना पसंद नहीं, खुले आसमान में स्वतंत्र उड़ान भरना ही प्रिय है !"		२. पंछियों की चोंच किसके सामान है? ३. वे अपनी चोंच से क्या खाने की इच्छा रखते हैं? ४. क्षितिज का क्या अर्थ होता है? ५. पक्षी गुलामी की अपेक्षा किसे पसंद करते है? ६. अंत में पंछी	**और उसकी फोटो खींचकर दी गए email पर भेजिए| विद्यालय खुलने पर कॉपी साथ लाना आवश्यक है| कार्य निर्धारित अंकों पर दिया गया है । हिंदी का सभी कार्य एक ही कॉपी**

			मनुष्यों से क्या कहना चाहते हैं?	**में कीजिएगा |**
	<u>गतिविधि</u>: कविता का पुनरावर्तन करते हुए कविता कंठस्थ कीजिए | *मनुष्य जाति के अलावा अन्य प्राणियों के प्रति भी संवेदनशील बनिए और प्रयास करें कि हम अपनी और से उन्हें कोई हानि न पहुँचाएँ| *गर्मियों के दिन आ चुके हैं| पक्षी प्यास से व्याकुल होते हैं| अतः अपने घर की छतों पर, आँगन में, या बगीचे में पंछियों के भोजन पानी आदि की व्यवस्था कीजिए और उसकी फोटो भी भेजिए उसमें यदि पक्षी भी आ जाएँ तो और भी बेहतर |	अपना घर और परिवेश	**<u>मूल्याधारित प्रश्न</u>** प्रश्न 1. आप अपने परिवेश में पक्षियों को देखकर बताइए कि पक्षी आपको कहाँ अच्छे लगते हैं? स्वच्छन्दता से विचरण करते हुए	**पाठ सम्बन्धी सुझावों का स्वागत है|**

			या पिंजरे में? प्रश्न 2. आकाश में उड़ने वाले पंछियों के लिए आप अपने स्तर पर क्या क्या सकते हैं? लिखिए|	

Subject Teacher- कल्पना चौरसिया